EDII

Rajasthan Patrika

May 17, 2024
Page No.1

दुर्लभ कला को सम्मान | **राज्य का कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग कार्यालय ईडीआइआइ के सहयोग से दे रहा बढ़ावा**

अहमदाबाद की सौदागरी ब्लॉक प्रिंट सहित प्रदेश की 4 हेरिटेज क्राफ्ट को जीआइ टैग

अहमदाबाद @ पत्रिका. प्रकृति, पक्षियों के प्रेम और हाथों के हुनर के बूते लोगों को आकर्षित करने वाली अहमदाबाद की सौदागरी ब्लॉक प्रिंट सहित गुजरात की 4 हेरिटेज क्राफ्ट को वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के जीआइ रजिस्ट्री ऑफिस ने जियोग्राफिकल इंडिकेशन (जीआइ) टैग दिया है। इनमें सौदागरी ब्लॉक प्रिंट के साथ गुजरात सूफ कढ़ाई, सूरत सादेली क्राफ्ट व भरुच की सुजनी बुनाई शामिल है। शामिल हैं। गुरुवार को भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआइआइ) अहमदाबाद में आयोजित समारोह में इन कलाओं के कारीगरों को कुटीर व ग्रामीण उद्योग आयुक्त व सचिव प्रवीण सोलंकी, नाबार्ड के सीजीएम बी के सिंघल, सेंटर फॉर एन्वायरमेंट एजुकेशन के निदेशक कार्तिकेय साराभाई, ईडीआइआइ के डीजी डॉ. सुनील शुक्ला और संस्थान के हस्तकला सेतु प्रोजेक्ट के निदेशक प्रो.सत्य रंजन आचार्य ने प्रमाण-पत्र दिया।

ईडीआइआइ में एक हस्तकला कारीगर को जीआई टैग प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते अतिथि।

गुजरात सूफ कढ़ाई

इसे गुजरात के बनासकांठा और कच्छ क्षेत्रों से उत्पन्न माना जाता है। सूफ कढ़ाई अपनी ज्यामितीय गणना-आधारित रिवर्स कढ़ाई तकनीक के लिए प्रसिद्ध है। यह मेघवाल और मारू समुदायों की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है।

अहमदाबाद सौदागरी ब्लॉक

गुजरात की पुष्प विरासत का प्रमाण है। सौदागरी ब्लॉक प्रिंट सागौन की लकड़ी के ब्लॉकों पर उकेरे गए पैटर्न के लिए जानी जाती है। यह छीपा-मुस्लिम समुदायों के कुशल कारीगरों की पोषित परंपरा है। इसमें प्रकृति और पक्षियों के रंग, प्रेम को भी देखा जा सकता है।

कुटीर व ग्रामीण उद्योग आयुक्त सोलंकी ने कहा कि गुजरात अपनी कला विरासत के मामले में भी विशेष पहचान रखता है। गुजरात अनोखी कलाओं का घर है। इन्हें पोषित करना हमारी जिम्मेदारी है। इसके लिए ईडीआईआई के साथ मिलकर राज्य सरकार कारीगरों को कौशल प्रशिक्षण देने, डिजिटल मार्केट में पहचान बनाने में मददरूप हो रही है।

सूरत सादेली शिल्प: *19वीं शताब्दी की बेहतरीन लकड़ी की परंपरा है। सादेली शिल्प कई सामग्रियों के जटिल पैटर्न को दर्शाती है। यह सूरत में पेटीगारा परिवारों की महारथ का प्रमाण है।*

भरूच की सुजनी बुनाई: *इसकी जड़ें 1860 के दशक से देखने को मिलती हैं। भरूच की सुजनी बुनाई कपास के बादलों से भरे जटिल ज यामितीय डिजाइनों का उदाहरण देती है, जो सुजनीवाला, चिश्तिया व मिया मुस्तफा के परिवार की विरासत को संरक्षित करती हैं।*

नाबार्ड के सीजीएम बी के सिंघल ने कहा कि पारंपरिक कला-शिल्प कौशल हमारी विरासत है जिसे पोषित व मान्यता देने की जरूरत है। जीआइ टैगिंग इस बात का प्रमाण है कि प्रदेश की पारंपरिक कला के पास मजबूत बाजार है।

ईडीआईआई के डीजी शुक्ला ने कहा कि 2020 में संस्थान की ओर से शुरू की गई हस्तकला सेतु योजना में 33 जिलों में 33,939 से अधिक कारीगरों को जागरूक किया जा चुका है। 22,000 से ज्यादा को प्रशिक्षित किया जा चुका है।